समास

Name :- Soni kumari
class :- B.A III year
Deptt :- Sanskrit

अहः-सर्वैकदेश-संख्यात पुण्याच्च रात्रेः

प्रस्तुत सूत्र वरदराज विरचित लघुसिद्धान्त कौमुदी के समास प्रकरण से उद्धृत है। सूत्र का शब्दार्थ है (अहः-पुण्यात) अहः, सर्व, एकदेश, संख्यात् और पुण्य से परे ---(च) और (रात्रेः) रात्रि के --। यहाँ सूत्रस्थ 'च' से ही ज्ञात हो जाता है कि यह सूत्र अपूर्ण है। इसके स्पष्टीकरण के लिए अधिकार सूत्र 'समासान्ताः', 'अच् प्रत्यन्ववपूर्वात्' से 'अच्' तथा तत्पुरुषस्य' से 'संख्याऽव्ययादेः और 'तत्पुरुषस्य' की अनुवृत्ति करनी होगी। 'अहः' को छोड़कर 'सर्व' आदि सभी का सम्बन्ध 'तत्पुरुषस्य' से है। 'अहः' का ग्रहण द्वन्द्व समास के लिए है। प्रत्ययः और परश्च का पूर्ववत् अधिकार है ही। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा — द्वन्द्व समास में 'अहः' (अहन्-दिन) के पश्चात् और तत्पुरुष समास में सर्व, एकदेश, संख्यात (गिना हुआ) तथा पुण्य के पश्चात् रात्रि शब्द से समासान्त 'अच्' (अच्) प्रत्यय होता है। सूत्र में 'च' कहने से संख्यापूर्वक और अव्ययपूर्वक रात्रि से भी समासान्त अच् प्रत्यय होता है। उदा० — 'अहश्च रात्रिश्च' (दिन और रात्रि) — इस विग्रह में 'अहः' और 'रात्रिः' का द्वन्द्व समास हो 'अहन् रात्रि' रूप बनता है। यहाँ द्वन्द्व में 'अहन्' के बाद 'रात्रि' शब्द आया है, अतः प्रस्तुत सूत्र से

समासान्त 'अच्' (अ) प्रत्यय हो 'अहन् रात्रि अ
रूप बनेगा। तब इकार-लोप और नकार को
उत्व होकर 'अहोरात्र' रूप बनने पर स नपुंसक
से नपुंसकलिङ्ग प्राप्त होता है। ~~किन्तु~~